International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 8; August 2016; Page No. 80-82

रीवा जिला : महिला उद्यमिता विकास का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. शान्ती पटेल

अतिथि विद्वान अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांष

महिलाओं में उद्यमिता का विकास हो, वे सफल उद्यमी बने इसके लिए यह आवश्यक है कि उनमें राजनीतिक आर्थिक चेतना एवं उसके प्रति जागरुकता हो, तभी वे एक सफल उद्यमी के रूप में सामने आ सकती है। वर्ष 2011 से 2015 तक प्रत्येक वर्ष कुल 877, 966, 1014, 1088, 1133 उद्योग स्थापित हुए। इन उद्योगों में महिला उद्योगों का प्रतिशत 12.88, 13.04, 14.00, 15.35 वं 16.24 है। इन उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी 12.24 प्रतिशत रही। इस तरह से महिलाओं को उचित भागीदारी प्राप्त नही हो सकी है। महिला उद्यमिता के विकास से महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता आयेगी। इससे उनमें स्वयं निर्णय लेने की शक्ति का विकास होगा, उनमें नेतृत्व करनेकी क्षमता का विकास होगा। नेतृत्व विकास के परिणाम स्वरूप वे अपनी संतानों का उचित मार्गदर्शन कर सकेगी। इस तरही की महिलायें समाज के लिए उदाहरण बनकर सम्पूर्ण समाज के विकास में सहायक बन सकेगी।

शब्द कुंजी: रीवा जिला, महिला, उद्यमिता, विकास, नीति, कार्यक्रम, समीक्षात्मक

प्रस्तावना

आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है, तो समय एवं परिस्थितियाँ सामाजिक परिवर्तन के लिए मूलाधार का काम करती है। समाजशास्त्रियों, मानवतावादी, अर्थशास्त्रियों एवं चिन्तकों ने इस बात को गहराई से अनुभव किया कि महिलाओं को सम्पत्ति एवं समस्त प्रकार के आर्थिक अधिकार दिये जाने चाहिए जिससे उन्हें सदियों से वंचित कर दिया गया था। महिलाओं को भी उद्यम एवं व्यवसाय के क्षेत्र में आने के समस्त अधिकार मिलने चाहिए। महिलाओं में बढ़ती शिक्षा ने उनमें जागरुकता एवं महत्वाकांक्षा को जन्म दिया। महिलायें व्यवसाय एवं उद्यम के क्षेत्र में प्रवेश करने लगी। महिलाओं के उद्यम एवं व्यवसाय क्षेत्र में आने के बाद उनके उद्यम एवं व्यवसाय स्थापित करने के गुणों को व्यक्त करने के लिए महिला उद्यमिता शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।

नारमन लॉग के अनुसार– 'उद्यमिता का तात्पर्य उद्यम एवं निर्णय की ऐसी जटिल प्रक्रिया से है जिसका लक्ष्य किसी आर्थिक क्रिया का इकाई का प्रसार करना है।"

इस तरह से उद्यमिता में उद्यम से सम्बन्धित निर्णय की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण स्थान एवं योगदान होता है। व्यावसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्र में लगे महिला संगठनकर्ता विवेकपूर्ण जोखिम को स्वीकार करती हुई किसी उद्यम का स्वामित्व प्राप्त करती है, उसे आयोजित करती है, उसका प्रबन्ध करती है, उसे चलाती है, तो वह महिला उद्यमिता शब्द को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है। उसके ये गुण ही महिला उद्यमिता है।

महिला उद्यमिता, महिला का उद्योग एवं व्यावसाय के संस्थागत विकास को मूर्तरूप प्रदान करने वाला गुण है। संस्थागत विकास से अभिप्राय है, उद्योग की संगठनात्मक संरचना, आधारभूत संरचना, संस्था के कार्मिक घटकों की टीम भावना की प्रगति एवं उन्नति से है। यही महिला उद्यमिता का मूलाधार है। महिला उद्यमिता उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अवसर पहचानने एवं लक्ष्य प्राप्त करने की एक प्रक्रिया है जिसे वह मूर्तरूप देने का प्रयास करती है। उत्पादन के सभी साधनों को एक निश्चित मूल्य पर खरीदती है, एकत्रित करती है। इन साधनों द्वारा उत्पादन करती है और अपने उत्पाद को एक निश्चित दर पर बेंचने का बीड़ा उठाती है। इस तरह से वह एक ऐसा जोखिम उठाती है, जिसका कोई बीमा नहीं होता है।उसे निनियोग के अवसरों को खोजना पड़ता है, जिससे लाभ कमाया जा सके। अवसर की तलाश करने के बाद उसे इकाई की स्थापना हेतु, पंजीकरण, लाइसेन्स अन्य सहयोगी इकाअइयों के साथ सहयोग एवं सामंजस्य के साथ कार्यो को सम्पन्न करना पड़ता है। प्रारंभिक पूंजी, वित्तीय संस्थाओं से ऋण, अनुदान आदि की व्यवस्था करके उत्पादन एवं विपणन के अवसर तलाशना पड़ता है। उद्यमिता के आवश्यक अवयवों को सावधानी पूर्वक सम्पन्न करना पड़ता है। उद्यमिता के वे आवश्यक अवयव जिन्हें महिला उद्यमी द्वारा सावधानी पूर्वक सम्पन्न करना पड़ता है, जो निम्नलिखित है–

नियोजना – महिला उद्यमी देश काल, परिस्थितियों, संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखकर भविष्य के लिये योजना तैयार करती है। व्यावसायिक इकाइयों का उद्देश्य निश्चित करती है और इसक लिये नियोजित करती है।

संगठन – लक्ष्य की प्राप्ति हेतु निश्चित की गई योजना को कार्य रूप में परिणित करती हैं। उत्पादन के संसाधनों को इस प्रकार संगठित करती है, जिससे अधिकतर प्रतिफल पाया जा सके।

निर्देषन – भविष्य के लिये योजना बना लेने एवं उनके अनुरूप संगठन खड़ा कर देने मात्र से उद्देश्यों की पूर्ति संभव नही हो पाती है। इसके लिए बदलती हुयी परिस्थितियों के अनुरूप उचित निर्देशन की आवश्यकता होती है। कर्मचारियों की दृष्टि में संगठनकर्ता की यह भूमिका मार्गदर्शक, दार्शनिक एवं सहयोगी की होनी चाहिए। सही एवं उचित निर्देशन सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

नियंत्रण – व्यावसायिक इकाई के सफल संचालन के नियंत्रण की महत्वपूर्ण भूमिका है। संगठनकर्ता को सदैव सर्तक होकर सतत् यह देखते रहना चाहिए कि निर्देशों का पालन किया जा रहा है या नहीं एवं लागत नियंत्रण, आय–व्यय नियंत्रण, गुण नियंत्रण, प्रणाली आदि ठीक से कार्य कर रहे हैं या नहीं।

पुनर्मूल्यांकन – संगठनकर्ता का अंतिम महत्वपूर्ण कार्य होता है कि स्थापित की जाने वाली इकाई के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर उसका मूल्यांकन करें, उसकी सफलता, असफलता की विवेचना करें।

इस तरह से संक्षेप में उद्यमिता उत्पादन अथवा सेवा आधारित आर्थिक क्रियाकलाप है। उद्यमिता उत्प्रेरणा तथा क्षमता का एक मिश्रित कार्य है और इसके माध्यम से सामर्थ्य का मूल्यांकन किया जाता है। उद्यमिता उपलब्धियों को प्राप्त करने हेतु दृढ़ इच्छा से की जाने वाली क्रिया है। उद्यमिता के अन्तर्गत जोखिम निहित होती है परन्तु लाभ की आशा में जोखिम उठाना आवश्यक होता है। उद्यमिता के माध्यम से प्रबंध संबंधी कार्यों को पूरा किया जाता है। उद्यमिता मनोकामना अनुसार उपलब्धि प्राप्ति करने की तीव्र इच्छा है जो उद्यमी को कुछ करने के लिए दृढ़ता से प्रेरित करती है।

शोध विधि

प्रत्येक सर्वेक्षण में कुछ पद्धतियाँ व तरीके अपनाये जाते हैं जिसके आधार पर सर्वेक्षण कार्य किया जाता है। ऐसी विधियाँ क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखते हुए अपनायी जाती है। अध्ययन पद्धति से तात्पर्य किसी भी कार्य को सम्पादित करने का उपयुक्त एवं संतोषजनक तरीका या विधि आर्थिक प्रणाली एवं संतोषजनक सामाजिक घटनाओं के संबंधमें किये जाने वाले शोध कार्य आंकड़ों का एकत्रीकरण व वर्गीकरण व विश्लेषण एवं सामग्रीकरण के उद्देश्य से संचालित किये जाते है। प्रस्तुत शोध में निम्न अध्ययन विधियों का प्रयोग किया है–

1. साक्षात्कार पद्धति
2. प्रश्नावली अनुसूची

इसके अतिरिक्त गहन अध्ययन के लिए प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों को संग्रहित कर उनका विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

रीवा जिले का निर्माण सन् 1950 में हुआ था। रियासतों के विलय के पूर्व तक रीवा राज्य उत्तरी एवं दक्षिणी दो जिलों में विभक्त था, जिसमें वर्तमान रीवा, सीधी, शहडोल एवं उमरिया जिले शामिल थे। रीवा जिले में 9 विकासखण्ड है जिनके नाम रीवा, सिरमौर, त्योंथर, रायपुर कर्चुलियान, मऊगंज, गंगेव, जवा, हनुमना एवं नईगढ़ी है।

भौगोलिक स्थिति : रीवा जिला 24°18′–25°12′ उत्तरी अक्षांश तथा 80°20′–81°12′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।

जिले की सीमाएँ : रीवा जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व–पूवोत्तर में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, दक्षिण में मध्यप्रदेश के सीधी और दक्षिण–पश्चिम में सतना जिले की सीमाएँ लगती है। रीवा जिला का क्षेत्रफल 6314 वर्ग कि.मी. है।

जलवायु : रीवा जिले की जलवायु विषम हैं यहाँ की जलवायु को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है– ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु एवं शीत ऋतु।

तापमान : ग्रीष्मकालीन औसत तापमान 40° से 43° सेन्टीग्रेट तक एवं शीतकालीन औसत तापमान 7° से 10° सेन्टीग्रेट तक रहता है। जिले का अधिकतम तापमान मई माह में 45.4° सेन्टीग्रेट तथा न्यूनतम जनवरी माह में 4° सेन्टीग्रेट रहता है।

वर्षा : जिले की औसत वर्षा 137 से.मी. से 144 से.मी. रहती है मुख्य नदियाँ जो जिले में प्रवाहित होती निम्न है– टोन्स, बीहर, बिछिया, महाना, बेलन, ओड्डा, गोरमा, करियारी।

क्षेत्र की विषेषताएँ : विन्ध्य पर्वत श्रृंखला में स्थित रीवा जिला समद्विवाहु त्रिभुजाकार है, जिसकी आधार भुजा पश्चिम की ओर सतना से लगी है। पार्श्व भुजाएं हनुमना शीर्ष से मिलती हैं। रीवा जिले में मुख्यतः चूना पत्थर एवं बाक्साइट का भंडार है तथा रेवा की कैमूर पर्वत श्रेणी विश्व प्रसिद्ध 'सफेद शेर' की प्राप्त स्थलीय है।

सारणी 1: वर्ष 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार रीवा जिले की जनसंख्या

विवरण	वर्ष 2001	वर्ष 2011
कुल जनसंख्या	1973306	2363744
पुरुष	1016687	1224918
महिला	996619	1138826
जनसंख्या वृद्धि दर	24.3%	19.79%
जनसंख्या घनत्व	313/km²	374/km²
म.प्र. के अनुपात में रीवा की जनसंख्या	3.27%	3.26%
पुरुष/ महिला अनुपात (1000 प्रति पुरुष)	945	930
साक्षरता	62.23	73.42

सारणी 2: रीवा जिला में उद्योगों से संबंधित जानकारी

क्र.	वर्ष	कुल उद्योग	कुल निवेष (लाख में)	कुल रोजगार	महिला			
					संख्या	निवेष (लाख में)	रोजगार	कुल उद्योग से महिला उद्योग का प्रतिषत
1.	2011	877	213.66	1418	113	2.96	119	12.88
2.	2012	966	268.33	1523	126	3.08	134	13.04
3.	2013	1014	271.02	1610	142	3.22	166	14.00
4.	2014	1088	367.10	2245	167	36.10	173	15.35
5.	2015	1133	382.36	2301	184	42.24	184	16.24

स्त्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित

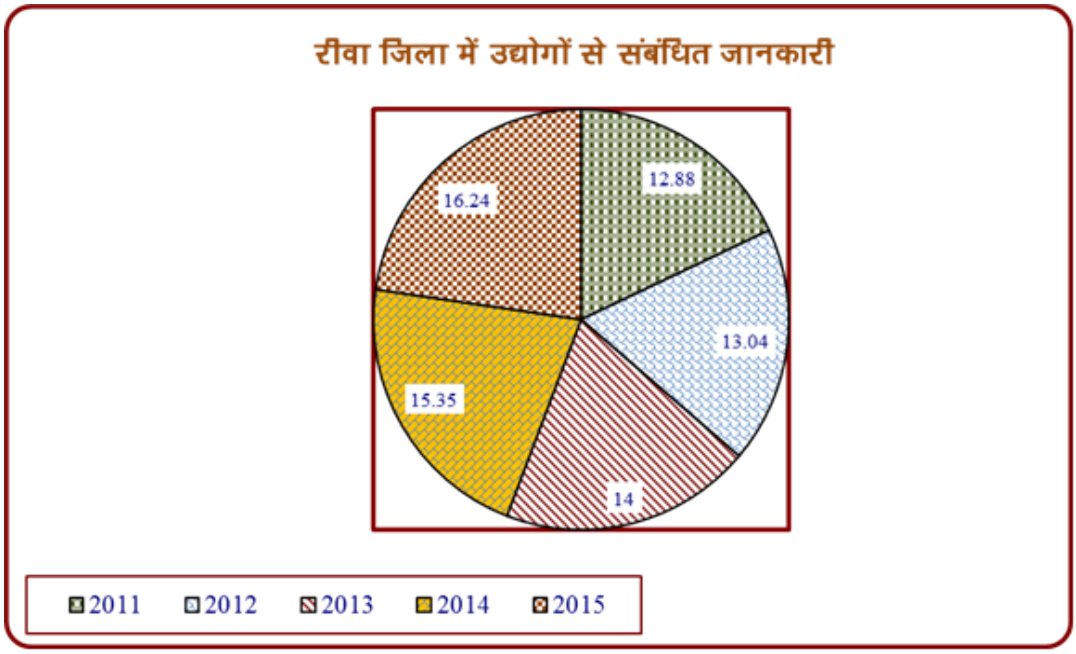

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2011 से 2015 तक प्रत्येक वर्ष कुल 877, 966, 1014, 1088, 1133 उद्योग स्थापित हुए। इन उद्योगों में महिला उद्योगों का प्रतिशत 12.88, 13.04, 14.00, 15.35 वं 16.24 है। इन उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी 12.24 प्रतिशत रही। इस तरह से महिलाओं को उचित भागीदारी प्राप्त नहीं हो सकी है।

निष्कर्ष

सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान का रास्ता महिला उद्यमिता होकर गुजरता है, हमारे देश में 25 से 40 वर्ष की आयु सीमा में आने वाली महिलाओं की संख्या करीब 25 करोड़ है। इनमें से करीब 6 करोड़ महिलाएँ घरों में निवास करती है, घरो में निवास करने वाली महिलाओं में अधिकांश शिक्षित है। इन्में ज्यादातर महिलाएँ मध्यम वर्ग से सम्बन्धित है, जो केवल घरों की चारदीवारी तक सीमित है। यदि ऐसी महिलाओं में उद्यमिता का दीप प्रज्वलित किया जाये तो 6 करोड़ महिला उद्यमिता शक्ति उत्पादन के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाकर समाज को समृद्धि के रास्ते पर ले जा सकती है।
महिलाओं में उद्यमिता विकास हेतु मध्यप्रदेश उद्यमिता विकास केन्द्र ने पिछले कई वर्षो में कई विशेष प्रक्षिण शिविर आयोजित किये है इसके साथ ही अन्य संचार माध्यमों से भी महिला उद्यमिता विकास को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है। इस क्षेत्र में एक तरफ जहाँ केन्द्रीय स्तर पर भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, राष्ट्रीय महिला कोष आदि संस्थायें कार्य कर रही हैं। वहीं राज्य स्तर पर महिला आर्थिक विकास निगम, मध्य प्रदेश विज्ञान एवं तकनीकी परिषद् महिला बाल विकास विभाग? ग्रामोंद्योग विभाग कार्य कर रहे हैं। जिला उद्योग कार्यालय प्रधानमंत्री रोजगार में केन्द्र सरकार की तरफ से नोडल एजेन्सी के रूप में कार्य कर रहा है, साथ ही अन्य लघु उद्योग कार्यक्रमों को भी संचालित कर रहा है।

सन्दर्भ

1. अग्निहोत्री, रामप्यारे – "रीवा राज्य का इतिहास" साहित्य परिषद, भोपाल, 1972।
2. उद्यमिता – विकास केन्द्र (म.प्र.) भोपाल, अप्रैल 1998, 60 जेल रोड जहॉगीरावाद भोपाल 1997।
3. योजना – सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पटियाला हाउस नई दिल्ली, 2000।
4. स्वरोजगार मार्ग दर्शिका – द्वितीय संस्करण उद्यमिता विकास केन्द्र म.प्र., 60 जेल रोड जहॉगीरावाद भोपाल 1999।
5. औद्योगिक मार्गदर्शिका – जिला उद्योग केन्द्र वाराणसी।
6. -Norman Long – Introduction of the Sociology of Rural Development p. 171.